**Note :** If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

# Hemendra Jyoti
## (Rashtrasant Shiromani Hemendrasuriji Abhinandan Granth)


| | |
|---|---|
| Folder No. | 012063 |
| Granth Name | Hemendra Jyoti |
| Author | Lekhendrashekharvijayji, Tejsinh Gaud |
| Publisher | Adinath Rajendra Jain Swetambara Pedhi – Mohankheda |
| Edition | 1 |
| Year | 2006 |
| Pages | 688 |


# हेमेन्द्र ज्योति
## (राष्ट्रसंत शिरोमणी हेमेन्द्रसूरिजी अभिनंदन ग्रन्थ)


| | |
|---|---|
| फोल्डर नं. | ०१२०६३ |
| ग्रन्थ | हेमेन्द्र ज्योति |
| मूल | लेखेन्द्रशेखऱविजयजी, तेजसिंह गौड़ |
| प्रकाशक | आदिनाथ राजचंद्र जैन श्वेताम्बर पेढी, मोहनखेड़ा |
| आवृत्ति | १ |
| प्रकाशन वर्ष | २००६ |
| पृष्ठ | ६८८ |



मुख्य टाइटल
संपादकीय
संयोजकीय
आभार
प्रकाशकीय
अनुक्रमणिका
प्रथम खण्ड - वन्दन भी अभिनन्दन भी ---------- १
द्वीतीय खण्ड - आस्था – अभिनन्दन ---------- १
तृतीय खण्ड - चिंतन के आलोक में
चतुर्थ खण्ड - जैनधर्म एवं दर्शन
मूर्ति पूजा की सार्थकता – ज्योतिषाचार्य मुनि जयप्रभविजय श्रमण ---------- १
मन्दिर जाने से पहले – मुनि नरेन्द्रविजय नवल शास्त्री ---------- ३


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भारतीय दर्शनों की मान्यतायें – मुनि लेखेन्द्रशेखरविजय ---------- ९
कर्म अस्तित्व के मूलाधार पूर्वजन्म और पुनर्जन्म – आचार्य देवेन्द्रमुनि म. ---------- १३
धर्म और जीवन मूल्य – पं. रत्न मुनि नेमिचन्द्र ---------- २८
स्याद्वाद सिद्धान्त एक विश्लेषण – रमेशमुनि शास्त्री ---------- ३८
अहिंसा दर्शन जीवन का निर्देशन – दिनेश मुनि ---------- ४७
आत्मवलम्बन के लिए जिन बिम्ब श्रेष्ठ आधार हैं – जैन विशारद मुनि जिनेन्द्र विजय
जलज ---------- ५३
जिन शासन में जयणा का महत्व – साध्वी मणिप्रभाश्री ---------- ५८
गहनों कर्मणों गति – साध्वी तत्वलोचनाश्री ---------- ६५
जैनधर्म में अभिव्यक्त हिंसा, अहिंसा – श्रीमती अर्चना प्रचण्डिया ---------- ६७
विश्वधर्म के रुप में जैनधर्म – दर्शन की प्रासंगिकता – राजीव प्रचण्डिया ---------- ७१
पार्श्वपत्य कथानकों के आधार पर भ. पार्श्वनाथ के उपदेश – नन्दलाल जैन ---------- ७७
महावीर की देशना और निहितार्थ – डॉ. सुनीताकुमारी ---------- ८४
जैन दर्शन के अनुसार आचार का स्वरुप – डॉ. वसुन्धरा शुक्ला ---------- ८८
विश्व की वर्तमान समस्यायें और जैन सिद्धान्त – डॉ. विनोदकुमार तिवारी ---------- ९६
ज्ञान की आराधना कीजिये – किशोरचन्द एम. वर्धन ---------- ९९
जैन परम्परा में उपवासों का वैज्ञानिक महत्व – डॉ. स्नेहरानी जैन ---------- १०२
सम्यगदर्शन के दो रुप – व्यवहार और निश्चय – अशोक मुनि ---------- १०७
ज्ञानवाद और प्रमाण शास्त्र – सुभाष मुनि सुमन ---------- १११
पाप और पुण्य – हुकमचंद एल. बाघरेचा ---------- ११८

पंचम खण्ड - जैन ईतिहास, कला, साहित्य एवं संस्कृति

विशिष्ट योग विधा – स्व मुनि श्री देवेन्द्रविजयजी म. सा. ---------- १
भारतीय ज्योतिष मे जैन मुनियों का योगदान – ज्योतिषाचार्य मुनिजयप्रभाविजय श्रमण ------- ४
वन्दनीय कौन हैं – मुनि पुष्पेन्द्रविजय ---------- ८
श्री मोहनखेडा तीर्थ संक्षिप्त ईतिहास – मुनि पीयूषचन्द्रविजय ---------- ९
निस्पृह संत का राजनीतिक अवदान – मुनि विमल सागर ---------- १२
संलेखना जैन दृष्टि में – साध्वी स्मृति, एम. ए. ---------- १५
मांडव में जैन धर्म – डॉ. श्यामसुन्दर निगम, डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन ---------- २०
दान रुप और स्वरुप – विधावारिधि डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया ---------- ३०
स्वप्न एक चिन्तन – डॉ. कालिदास जोशी ---------- ३३
जैन कला के विविध आयाम – प्रोफेसर एस. जी. शुक्ल ---------- ३६
उत्तम आहार शाकाहार – श्रीमती रंजना प्रचंडिया सोमेन्द्र ---------- ४१
प्राकृत – अपभ्रंश साहित्य में प्रयुक्त संज्ञाओं की व्युत्पत्ति – डॉ. धन्नालाल जैन ---------- ४३
व्यसन और संस्कार – डॉ. रज्जनकुमार ---------- ४५
महामंत्र णमोकार – जशकरण डागा ---------- ४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोरवाल जाति का संक्षिप्त ईतिहास – मुनि चन्द्रयशविजय ---------- ६६
णमोकार महामंत्र और उसकी उपादेयता – डॉ. संजीव प्रचंडिया सोमेन्द्र ---------- ७०
दृष्टि करो अपने जीवन पर – साध्वी मोक्षरसाश्री ---------- ७२
जालोर जिले के जैन तीर्थ – मुनि लाभेशविजय राजहंस ---------- ७३
जीवन में दान का महत्व – साध्वी पुष्पाश्री ---------- ८०
दलित उत्थान में जैन समाज का योगदान – डॉ. ए. बी. शिवाजी ---------- ८२
राग से वीतराग की ओर – साध्वी अनंतगुणाश्री ---------- ८५
साधु पद का महत्व – साध्वी मोक्षमालाश्री ---------- ८७
जैन साहित्य में द्वारिका – डॉ. तेजसिंह गौड ---------- ९०
जैनपर्व प्रयोग औऱ प्रासंगिकता – श्रीमती डॉ. अलका प्रचंडिया ---------- ९५
जैन एवं बौद्ध वाडमय में वर्णित कुरुक्षेत्र – डॉ. धर्मचन्द्र जैन ---------- १००
प्राचीन पंजाब का जैन पुरातत्व – पुरोषोत्तम जैन – रवीन्द्र जैन ---------- १०६
अदभूत समाधि साधना – साध्वी मणिप्रभाश्री ---------- ११२
विहार से लाभ – साध्वी मोक्षयशाश्री ---------- ११४
संयम जीवन का सुख – साध्वी पुनीतप्रज्ञाश्री ---------- ११५
क्षमा मेरी है – साध्वी क्षमाशीलाश्री ---------- ११६
धर्म और जीवन मूल्य – भगवन्तराव गाजरे ---------- ११७
मालव तीर्थ मोहनखेडा पध – सोहनलाल लहरी ---------- ११८
अखण्ड णमोकार गीत पध दिलीप धींग ---------- ११९
पोरवालजाति औऱ उसकी विभूतियां – स्व. मनोहरलाल पोरवाल – प्र, अशोक सेठिया -------- १२०
कष्टों एवं विषमताओं की औषधि समता – साध्वी किरणप्रभाश्री ---------- १२२
शान्ति – साध्वी महेन्द्रश्री ---------- १२५
अपरिग्रह एक मौलिक चिंतन है – फतेहलाल कोठारी ---------- १२६
जैन तीर्थ मुहारीपास – मुथा धेवरचंद हिम्मतलालजी ---------- १२८
बागरा नगर ईतिहास के आलोक में – पुखराज भण्डारी ---------- १२९

आंग्ल विभाग

Temple of a Jain Goddess – Dr. Dharamsingh----------131
Environment & Jain Vision – Dr. Shekharchandra Jain ----------133
Jaina Temples of the pratihare Period – Dr. Brajesh Krishna ----------140

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org